जनवाचन आंदोलन

जनवाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गाँव-गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव-गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरूक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 10 रुपये

खेत में उगी मछलियाँ

विजय विशाल

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

खेत में उगी मछलियाँ : विजय विशाल
Khet Me Ugi Machliyan : Vijay Vishal

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित
© सर्वाधिकार सुरक्षित:
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

पुस्तकमाला संपादक: असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

रेखांकन: पंकज झा
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 2006

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्य: 10 रुपए

Published by ***Bharat Gyan Vigyan Samithi,***
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017,
Phone : 011 - 6569943, Fax : 91 - 011 - 6569773, **email: bgvs@vsnl.net**

खेत में उगी मछलियाँ

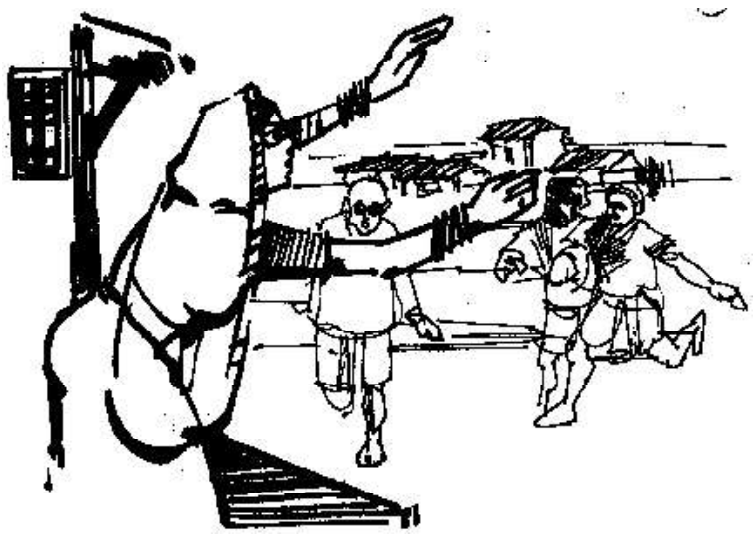

विजय विशाल

खेत में उगी मछलियाँ

''देखो हीरू, मैंने कई बार कहा है कि हम मर्दों की बातों में अपनी टाँग मत अड़ाया करो''—बुधिया ने गुस्से में कहा।

''क्यों न अड़ाऊँ? तुम जिस जमीन की बात कर रहे हो, मेरी रोटी भी तो उसी से जुड़ी है''—हीरू ने चट उ□ार दिया।

बुधिया गुस्से से तमतमा उठा—''औरत होकर मर्द के मुँह लगती है! तुम्हें अपनी औकात में रहना चाहिए। समझी!''

मगर हीरू कहाँ डरने वाली थी। इस तरह से डरती होती तो कब की मर गई होती! उसने फिर छेड़ा, ''क्या कर लोगे तुम? पीटोगे मुझे? और तुम कर भी क्या सकते हो! मगर मैं चुप रहने वाली नहीं। तुम गलत करोगे, तो मैं जरूर रोकूँगी। भले ही मेरी जान चली जाए।''

बुधिया आग बबूला हो उठा। इससे पहले कि वह उठकर हीरू

को दो झापड़ रसीद करता, दरवाजा खटखटाने की आवाज आई। दोनों चुप हो गए। बुधिया ने दरवाजा खोला। सामने प्रधान जी थे। प्रधान जी स्थिति ताड़ गए। हँसकर बोले— ''लड़ाई कभी अच्छी नहीं होती। बात क्या है, मैं भी तो जानूँ! भई, घर का ही आदमी हूँ।''

''परधान जी!''—बुधिया खिसियाकर बोला—''बात कोई खास नहीं। औरतजात जरा मुँहजोर हो रही है। मर्द की बातों में टाँग अड़ा रही थी। भला जमीन जायदाद के मामले में कभी औरतों से भी सलाह ली जाती है! ये हीरू है न, कहती है कि जिस जमीन की तुम बात कर रहे हो, मेरी रोटी भी उससे जुड़ी है। अब तु हीं

बताओ परधान जी, अगर हम मर्द, औरतों की बातें सुनने लगे, तो हो गया दुनिया का कल्याण!''

प्रधान जी के मुँह से सिर्फ इतना ही निकला—''हूँ!'' इससे पहले कि वे आगे कुछ और कहते, बुधिया फिर शुरू हो गया—''अरे परधान जी, इन औरतों की अकल तो पीछे की ओर होती है।

मैं ही नहीं कहता, सदियों से यह बात सभी कहते रहे हैं। बड़े-बूढ़ों की बातों में आखिर सच तो होगा ही! उनके बाल धूप में तो पके नहीं हैं।''

प्रधान जी बोले, ''सच कहते हो बुधिया भाई। औरतजात की सलाह से तो संसार नहीं चलता! मगर अब करें क्या? इधर सरकार भी इन्हें बड़ा वजन दे रही है। उसने पंचायत इलेक्शन में तो इनके लिए सीटें रिजर्व कर ही दी हैं।

अब तो विधानसभा और लोकसभा चुनावों में भी इनके लिए रिजर्वेशन की तैयारी चल रही है। सब कुछ बँटाधार समझो! आवाऊत हो जाएगा सब कुछ! तुम कहते हो इनकी अकल पीछे को होती है। अरे भाई, मैं तो कहता हूँ इनमें अकल होती ही नहीं।''

दोनों की बातें सुन हीरू जल भुन उठी थीं। मगर घर में एक पराया मर्द और वह भी गाँव का प्रधान, खड़ा है तो वह सब कुछ भीतर जप्त कर गई। वह गुस्से में पैर पटकती वहाँ से खिसक गई।

हिरू का पूरा नाम हीरामणि था। पढ़ने-लिखने का तो उसे कभी मौका ही नहीं मिला, पर थी बड़ी तेज। बुधिया से उसने कई बार सिर्फ इसलिए गालियाँ सुनीं कि वह औरत है। तंग आ गई थी वह इन बातों को सुनते-सुनते। उसने बुधिया को सबक सिखाने का फैसला लिया।

अप्रैल का महीना चल रहा था। खाली जमीन में हल बुआई शुरू हो गई थी। पहाड़ों में अभी सर्दी बाकी थी। हीरू सौदा-सुलफा लाने पास के कस्बे में गई। उसके गाँव में तो बस एक छोटी सी दुकान थी। वैसे वक्त वेवक्त वे उसी दुकान से सामान खरीदते थे।

मगर महीने में एक-दो बार कस्बे की दुकान में जाना ही पड़ता था। इस कस्बे तक ट्रांसपोर्ट की गाड़ी आती थी। जाहिर है, जब गाड़ी आती है तो वहाँ दुकानें भी ज्यादा होंगी। वहाँ कुछ मनियारी के खोखे पड़ गए थे। एक ढाबा व दो-तीन चाय की दुकानें भी खुल गई थीं। दूसरे गाँव के गिरधारी ने वहाँ रेहड़ी लगानी शुरू कर दी थी। वह उसपर मछलियाँ बेचता था—कच्ची भी और तली हुई भी। उसके गाँव के पास एक बड़ा नाला था। वह सवेरे उस नाले में जाल

लगाकर मछलियाँ पकड़ता। दोपहर के बाद उन्हें कस्बे में लाकर बेचता। साँझ घिरते अपना कारोबार समेट कर घर की राह लेता।

हीरू ने बुधिया को सबक सिखाने की तरकीब ढूँढ ली थी। कस्बे में उसके साथ गाँव की और औरतें भी थीं। सब अपनी-अपनी जरूरत का सामान ले रही थीं। हीरू ने सबकी आँख बचाकर गिरधारी से आधा किलो कच्ची मछलियाँ खरीद लीं। अपने झोले में उसने उन्हें सबसे नीचे छुपाकर रख लिया। उसने गाँव की दूसरी औरतों को इसकी भनक भी न लगने दी। बाकी जरूरी चीजें खरीद कर वह शाम होते-होते उन औरतों के साथ घर लौट आई।

बुधिया ने उसे घर आया देख कर कहा, ''तुम जरा डंगरों को घास-पानी देना। मैं परधान के घर होकर आता हूँ।'' यह कह कर वह बाहर निकल गया।

थोड़ी देर बाद हीरू भी मछलियाँ लेकर बाहर निकल गई। उसने एक छोटी-सी खुरपी साथ ले ली थी। वह सीधे उस खेत में गई जहाँ बुधिया को अगले दिन हल चलाना था। उसने छोटी-छोटी मछलियों को खुरपी की मदद से खेत के एक हिस्से में इधर-उधर एक-एक करके दबा दिया। रात को इन पहाड़ों में ठंड यों भी बढ़ जाती है। इसलिए सवेरे तक मछलियों के खराब होने की कोई संभावना न थी। फिर वह चुपचाप घर लौट आई। उसने डंगरों को घास-पानी डाला और फिर रोटी बनाने लग गई।

अगली सुबह बुधिया हल लेकर खेत की ओर चला। उसने हीरू को आवाज लगाई तो उसने कहा, ''तुम चलो। बैलों को हल में नाधो। मैं दो-चार रोटियाँ सेंक कर ोत में पहुँच जाऊँगी। सब्जी-भाजी आकर देख लूँगी।'' बुधिया बैलों को हाँकता खेत में पहुँचा।

उसने उन्हें हल से जोड़ा। फिर बैठ कर एक बीड़ी फूँकी। हीरू अभी पहुँची न थी। आदतन उसने औरतजात को एक-दो गालियाँ बड़बड़ाईं। फिर खेत में हल डाल दिया। अभी दो तीन फेरे ही लगे थे कि उसे मछलियाँ दीख गईं। पहले तो वह बड़ा हैरान हुआ। एक मछली को उठाकर उलटा पलटा—यह तो सचमुच की मछलियाँ हैं। फिर उससे मिट्टी साफ कर सूँघा। मछली खराब न थी।

वह चुपचाप मछलियाँ इकट्ठा करने लगा। वह उन्हें खेत के एक कोने में रखता गया। फिर जल्दी-जल्दी हल चलाने लगा। मगर अब मछलियाँ मिलनी बंद हो गई थीं। इतने में हीरू भी वहाँ पहुँच गई।

बुधिया ने उसे मछली मिलने का सारा किस्सा एक ही साँस में सुना डाला। हीरू ने हैरानी प्रकट की। अंदर ही अंदर उसे हँसी भी आ रही थी। बुधिया ने कहा, ''ज्यादा सोचने से क्या लाभ? कहीं

से भी आई हों, हैं तो आखिर मछलियाँ ही! ''क्यों हीरू?''

''ऐसा तो है,'' हीरू ने हाँ में हाँ मिलाया।

बुधिया आदेश के लहजे में बोला, ''हीरू! तुम इन मछलियों को लेकर सीधे घर चलो। किसी को बताना मत।''

''भला मैं क्यों बताने लगी।''

''अरे भई! मैं तो इसलिए कह रहा हूँ कि औरतजात के पेट में कभी पानी नहीं पचता।'' बुधिया ने इतना कह कर इधर-उधर देखा। आस-पास के खेतों में कोई न था।

''तुम इन्हें साफ-वाफ करके अच्छी तरह पकाना। तब तक मैं इस खेत की हलाई कर लेता हूँ।'' बुधिया बैलों को हाँकने लगा। हीरू भीतर ही भीतर हँसती, मछलियाँ लेकर घर की ओर चली। घर आकर उसने बड़े जतन से उन्हें साफ किया, पकाया और बुधिया के घर पहुँचने से पहले उन्हें कमरे में छुपा दिया।

बुधिया खेत जोतकर घर आ गया। उसने मिट्टी से सने अपने हाथ-पैर धोए। फिर वह रसोई में घुस कर मछलियाँ ढूँढ़ने लगा। उसे ताक-झाँक करता देख हीरू ने झट थाली में रोटी डाली और साथ में मिर्च वाला नमक परोस दिया। बुधिया तो मछली के ख्वाब में था। बोला, ''अरे यह क्या मजाक करती हो! मछली कहाँ है? उसे निकालो।''

''कैसी मछलियाँ?'' हीरू ने हैरानी जताई।

''अरे कैसी क्या! वही मछलियाँ जो सवेरे खेत में निकली हैं।''—बुधिया चिल्लाया।

हीरू झट रसोई से बाहर निकली और गाँव वालों को जोर-जोर से पुकारने लगी। गाँव के बच्चे-बूढ़े-जवान सब इकट्ठा हो गए।

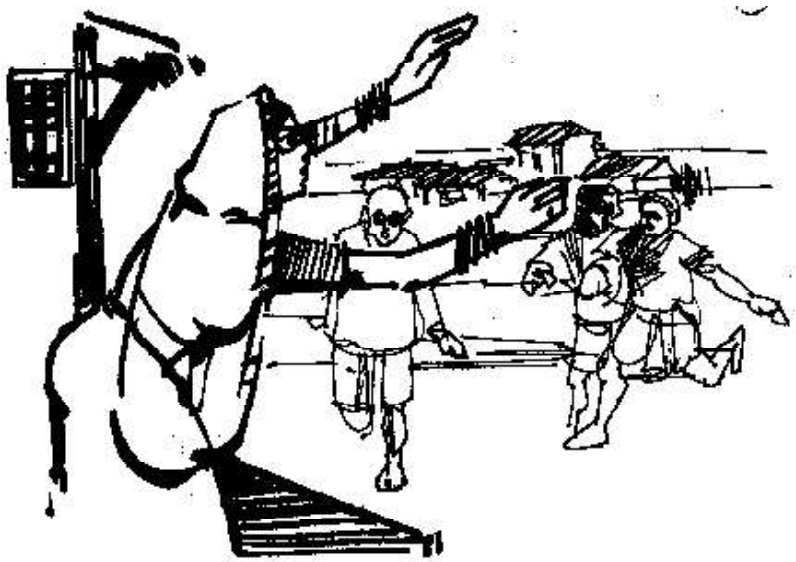

इससे पहले कि बुधिया कुछ समझ पाता, हीरू चिल्लाने लगी, ''अरे देखो, मेरे मरद को न जाने क्या हो गया है! किस डायन की छाया इसे पड़ गई है!'' फिर रोने लग गई। फिर कहने लगी—''सवरे यह खेत पर गया था। अब आकर कहता है कि मछली निकालो जो खेत से निकली हैं।''

गाँववाले भौंचक्क थे—''खेत से निकली मछलियाँ!'' बुधिया ने तैश में आकर कहा, ''हाँ। हाँ। खेत से निकली मछलियाँ।मैंने खुद हल लगा कर निकाला है उन्हें।''

''देखा आपने! मैं कहती थी न कि इसे किसी डायन की छाया पड़ गई है या किसी ने जादू-टोना कर दिया है। कहता है, खेत से मछलियाँ निकली हैं। अनाज का उगना तो सुना था, पर मछलियों का उगना...।'' इससे आगे हीरू कुछ और कहती, बुधिया उसकी

ओर झपट पड़ा।

''बचाओ लोगो। बचाओ। यह मुझे मार देगा!'' हीरू इधर-उधर भागती हुई बोली।

गाँव के चार-पाँच लोगों ने झट आगे बढ़ कर बुधिया को पकड़ लिया। वह छूटने के लिए छटपटाने लगा और चिल्लाने लगा—''अरे मुझे कोई भूत-वूत नहीं लगा है। न ही मुझपर किसी डायन की छाया पड़ी है। तुमलोग मुझे छोड़ दो। मैं बिल्कुल ठीक हूँ।''

''अगर तुम ठीक हो तो फिर खेत से मछली निकलने की रट क्यों लगा रहे हो?'' अबकी बार प्रधान जी ने पूछा।

''मैं सच कह रहा हूँ। मैंने खुद हल से मछलियाँ निकाली हैं।'' बुधिया फिर चिल्लाया—''यह औरत झूठ बोल रही है। मैंने इसे सचमुच की मछलियाँ पकाने को दी हैं।''

गाँव वाले आपस में कानाफुसी करने लगे—''भला सूखे खेत से कहीं मछलियाँ पैदा होती हैं। ऐसा तो किसी ने न कभी देखा, न सुना!''

बच्चों को खेल का एक नया मसाला मिल गया था। औरतें हीरू के साथ सहानुभूति जताने लगी थीं। मर्द समस्या का हल ढूँढ़ने में व्यस्त थे। हीरू रोती-सुबकती अपने भाग्य को कोसती जा रही थी। बुधिया गाँव वालों की पकड़ से छुटने को छटपटा रहा था। वह अपनी बात दुहरा रहा था और हीरू को मारने की धमकी भी दिए जा रहा था।

प्रधान जी ने गाँव वालों से सलाह मशविरा की। तय हुआ कि बुधिया की झाड़-फूँक की जाए। किसी अच्छे ओझा को जल्दी बुलाया जाए। जब-तब यह सारा इंतजाम न हो जाए, बुधिया को

बाँध कर रखा जाए।''

बुधिया ने लाख सफाई दी कि वह भला चंगा है फिर भी गाँव वालों ने उसके हाथ-पाँव रस्सियों से बाँध दिए। जब वह ज्यादा छटपटाने लगा, ज्यादा चिल्लाने लगा तो लोगों ने उसे बरामदे के खंभे से कस दिया। तब थक हार कर उसने चिल्लाना बंद कर दिया। अब वह चुपचाप आँखें बंद करके खंभे के सहारे खड़ा रहा। वह सारी घटना पर पुनः सोचने लगा। सब कुछ इतनी तेजी से घटित हुआ था कि खुद उसकी समझ में कुछ न आ रहा था। खेत में मछली मिलने के बारे में अब वह स्वयं शक करने लगा था। अब वह बिल्कुल चुप था।

लोगों ने सोचा, भूत का असर शायद कुछ कम हो रहा है। एक दो बूढ़ों ने सलाह दी, ''यहाँ ज्यादा भीड़ न लगाई जाए। इसे कुछ समय अकेले रहने दिया जाए।'' तब धीरे-धीरे सभी लोग बाहर

निकल गए।

पूरा गाँव अभी खेत से लौटा ही था। सबके रोटी खाने का समय हो गया था। औरतें अपने-अपने बच्चों को हाथ पकड़कर और मर्दों को आँख से घर आने का इशारा करती चल पड़ीं। मर्द आपस में बतियाते वहाँ से एक-एक करके खिसकने लगे। अंत में प्रधान के साथ दो-तीन और बचे। उन्होंने भी फैसला लिया कि पहले सभी घर जाकर रोटी खा लें, फिर यहाँ आकर सोचें कि आगे क्या किया जाए। हीरू को यह सूचित करके कि हम थोड़ी देर में आते हैं, वे भी चले गए। जाते-जाते उससे कह गए कि वह घबराए नहीं। सब कुछ ठीक हो जाएगा। तब तक वह भी रोटी खा ले।

सबके जाने के बाद हीरू कमरे के भीतर गई। उसने छुपाई हुई मछलियों की थाली निकाली और बरामदे में आ गई। फिर बड़े चटखारे लेकर बुधिया के सामने मछली खाने लगी। खम्बे से बँधा बुधिया कसमसा सकता था। खूब कसमसाया। वह हीरू को गालियाँ देने लगा। फिर जोर-जोर से चिल्लाने लगा, देखो ये रहीं वो मछलियाँ। अरे मैं झूठ थोड़े बोलता था! वो देखो, वह खा रही है।'' हीरू उसे चिल्लाता छोड़ फिर घर के भीतर घुस गई। उसने मछलियों की वह थाली फिर छिपा दी।

इतने में बुधिया की चिल्लाहट सुन आसपास के घरों से सभी लोग दौड़ पड़े। अभी उन्होंने रोटी आधी-अधूरी ही खाई थी। बुधिया चिल्लाता रहा। वह हीरू को गालियाँ देता रहा। उसने सारा घर सिर पर उठा रखा था। वह रस्सियों से छूटते ही हीरू को मारने की धमकी देता रहा। जब गाँव वालों पर उसकी बातों का कोई असर न हुआ, तो तंग आकर उसने गाँव वालों को भी गालियाँ देनी

शुरू कर दी। वह उन्हें भी धमकाने लगा।

उसके रिश्ते के दो-तीन नौजवान तैश में आ गए। उन्होंने आगे बढ़कर उसे पीटना चाहा। तब हीरू झट बीच में आ गई। उसने बुधिया को मार खाने से बचा लिया। अब बुधिया ने मन ही मन हार मान ली। वह चुप हो गया। उसने फिर आँखे बंद कर लीं। उसने सारी बातों पर दोबारा सोचना शुरू कर दिया। उसे सारी फसाद की जड़ हीरू ही नजर आ रही थी। मगर यह उसकी समझ से परे था कि वह यह सब क्यों कर रही है।

हीरू गाँव वालों को घर से बाहर ले आई। उसने सबसे बुधिया को कुछ देर अकेला छोड़ने की प्रार्थना की। वह बाहर आकर फिर बुधिया के इलाज की योजनाएँ बनाने लगी। झाड़-फूँक, ओझा-गुनी लाने की बातें सुन-सुन कर वह मन ही मन हँस रही थी। मगर उसे चिंता भी होने लगी थी, क्योंकि मामला संगीन बनता जा रहा था। उसे डर लगने लगा। अगर जल्दी से स्थिति न संभाली जाती तो झाड़-फूँक का सिलसिला शुरू हो जाता।

हीरू ने झाड़-फूँक कराने से मना कर दिया। उसने कहा कि वह बुधिया को कस्बे के डॉक्टर के पास ले जाएगी। बड़े-बूढ़े हीरू की इस दलील पर झल्ला उठे। भला इसमें डॉक्टर का क्या काम!

हीरू ने सबके खिलाफ कमर कस ली। वह चिल्लाकर बोली, ''अरे मेरा मर्द है। मैं इसका इलाज डॉक्टर से कराऊँगी। ओझा को हाथ न लगाने दूँगी। यहाँ कोई झाड़-फूँक नहीं होगी।''

सबने उसे समझाया। मगर वह टस से मस न हुई। थक हार कर गाँव वाले उसे कोसते हुए धीरे-धीरे चले गए। वे सोचते थे कि जरूरत पड़ने पर यह खुद हमें सहायता के लिए पुकारेगी, तब हम

इसे जवाब देंगे।

अब हीरू अकेली रह गई। वह भीतर आई और बुधिया के सामने चुपचाप खड़ी हो गई। उसकी आँखों में स्नेह था। बुधिया कुछ बोलता, उससे पहले ही वह बोल पड़ी, ''मैं तुम्हारे मन में उठने वाले सवालों को समझ रही हूँ। तुम क्या पूछना चाहते हो, मैं जानती हूँ।'' बुधिया अवाक होकर हीरू को देखता रहा। हीरू ने अपनी बात जारी रखी, ''तुम्हारे सवालों के उत्तर भी दे दूँगी। पर ठहरो, पहले तुम्हें खोल देती हूँ।''

फिर उसकी रस्सी खोलते हुए बोली, ''तुम्हें बहुत तकलीफ उठानी पड़ी। मगर मैं क्या करती! औरत में भी अकल होती है, इसका सबूत देने के लिए मुझे यह सब करना पड़ा।'' हीरू ने ये

बातें इतने प्यार से कहीं कि बुधिया का गुस्सा उतर गया।

अब रस्सी खुल गई थी। बुधिया को बड़े जोर की भूख लगी थी। हीरू ने उसे झट मछली परोस दी। हीरू ने उसे मछली के बारे में पूरा किस्सा सुना दिया। उस के बाद बुधिया ने कभी नहीं कहा कि औरत को अकल नहीं होती।

❐❐❐